अमिताव घोष

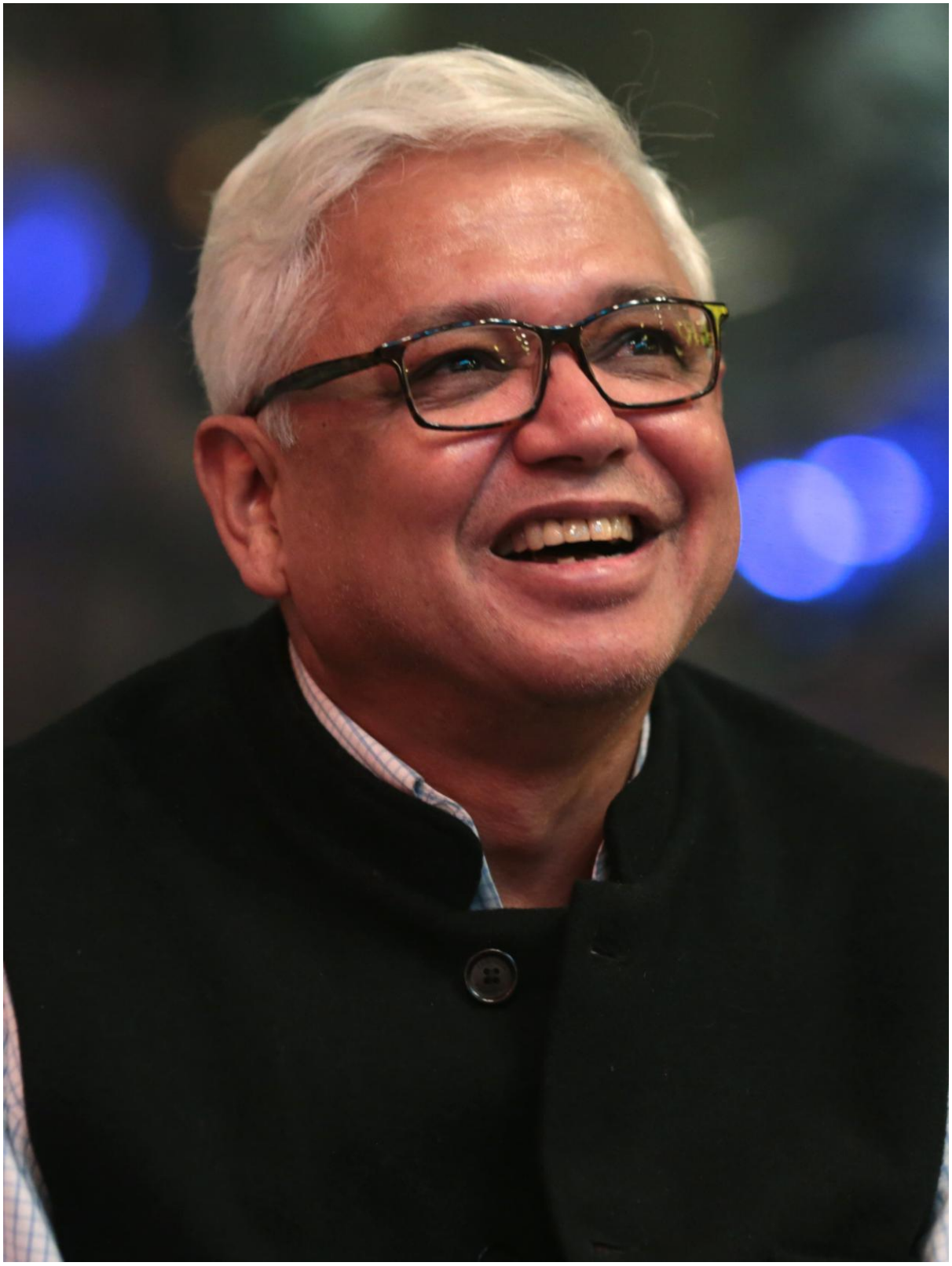

अमिताव घोष (जन्म 11 जुलाई 1956) एक भारतीय लेखक हैं । उन्होंने 2018 में 54वां ज्ञानपीठ पुरस्कार जीता , जो भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान है। घोष के महत्वाकांक्षी उपन्यास, विशेष रूप से भारत और दक्षिण एशिया के लोगों की राष्ट्रीय और व्यक्तिगत पहचान की प्रकृति की जांच करने के लिए जटिल कथा रणनीतियों का उपयोग करते हैं । उन्होंने ऐतिहासिक कथा साहित्य लिखा है और उपनिवेशवाद और जलवायु परिवर्तन जैसे विषयों पर चर्चा करते हुए गैर-काल्पनिक रचनाएँ भी लिखी हैं ।

घोष ने दून स्कूल , देहरादून से पढ़ाई की और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से सामाजिक मानवविज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की । उन्होंने नई दिल्ली में *इंडियन एक्सप्रेस* अखबार और कई शैक्षणिक संस्थानों में काम किया। उनका पहला उपन्यास *द सर्कल ऑफ रीज़न* 1986 में प्रकाशित हुआ था , जिसके बाद उन्होंने बाद में *द शैडो लाइन्स* और *द ग्लास पैलेस सहित काल्पनिक रचनाएँ लिखीं ।* 2004 और 2015 के बीच , उन्होंने *इबिस* त्रयी पर काम किया , जो प्रथम ओपियम युद्ध के निर्माण और निहितार्थ के इर्द-गिर्द घूमती है । उनके गैर-काल्पनिक कार्यों *में इन एन एंटीक लैंड* और *द ग्रेट डिरेंजमेंट: क्लाइमेट चेंज एंड द अनथिंकेबल* शामिल हैं ।

घोष के पास दो लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार और चार मानद डॉक्टरेट हैं। 2007 में उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारत के सर्वोच्च सम्मानों में से एक , पद्म श्री से सम्मानित किया गया। 2010 में वह डैन डेविड पुरस्कार के मार्गरेट एटवुड के साथ संयुक्त विजेता थे , और 2011 में उन्हें मॉन्ट्रियल में ब्लू मेट्रोपोलिस उत्सव के ग्रैंड प्रिक्स से सम्मानित किया गया था । वह यह पुरस्कार पाने वाले पहले अंग्रेजी भाषा के लेखक थे। 2019 में *फॉरेन पॉलिसी* पत्रिका ने उन्हें पिछले दशक के सबसे महत्वपूर्ण वैश्विक विचारकों में से एक बताया।

जीवन

घोष का जन्म 11 जुलाई 1956 को कलकत्ता में हुआ था और उनकी शिक्षा देहरादून के ऑल-बॉयज़ बोर्डिंग स्कूल द दून स्कूल में हुई थी। वह भारत , बांग्लादेश और श्रीलंका में पले-बढ़े । दून में उनके समकालीनों में लेखक विक्रम सेठ और इतिहासकार राम गुहा शामिल थे । स्कूल में रहते हुए , उन्होंने नियमित रूप से द दून स्कूल वीकली (तब सेठ द्वारा संपादित) में कथा और कविता का योगदान दिया और गुहा के साथ हिस्ट्री टाइम्स पत्रिका की स्थापना की । दून के बाद , उन्होंने सेंट स्टीफंस कॉलेज , दिल्ली विश्वविद्यालय और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से डिग्री प्राप्त की ।

इसके बाद उन्होंने डी.फिल पूरा करने के लिए इनलाक्स फाउंडेशन छात्रवृत्ति जीती । ब्रिटिश सामाजिक मानवविज्ञानी पीटर लीनहार्ट की देखरेख में सेंट एडमंड हॉल , ऑक्सफ़ोर्ड में सामाजिक मानवविज्ञान में । थीसिस, मानव विज्ञान और भूगोल संकाय में शुरू की गई , जिसका शीर्षक था "मिस्र के ग्रामीण समुदाय में आर्थिक और सामाजिक संगठन के संबंध में रिश्तेदारी" और 1982 में प्रस्तुत की गई।

2009 में, उन्हें रॉयल सोसाइटी ऑफ लिटरेचर का फेलो चुना गया । [11] 2015 में घोष को फोर्ड फाउंडेशन आर्ट ऑफ चेंज फेलो नामित किया गया था।

उन्हें 2007 में भारत सरकार द्वारा पद्म श्री से सम्मानित किया गया था

घोष आईबिस त्रयी पर काम शुरू करने के लिए भारत लौट आए , जिसमें सी ऑफ पोपीज़ (2008) , रिवर ऑफ स्मोक (2011) , और फ्लड ऑफ फायर (2015) शामिल हैं।

घोष अपनी पत्नी डेबोरा बेकर के साथ न्यूयॉर्क में रहते हैं , जो लॉरा राइडिंग की जीवनी इन एक्स्ट्रीमिस: द लाइफ ऑफ लॉरा राइडिंग (1993) की लेखिका हैं और लिटिल, ब्राउन एंड कंपनी में वरिष्ठ संपादक हैं । उनके दो बच्चे हैं, लीला और नयन।

कार्य

फिक्शन

घोष द सर्कल ऑफ रीज़न (उनका 1986 का पहला उपन्यास), *द शैडो लाइन्स* (1988), *द कलकत्ता क्रोमोसोम* (1995), *द ग्लास पैलेस* (2000), *द हंग्री टाइड* (2004) और गन आइलैंड (2019) के लेखक हैं । [14]

घोष ने 2004 में द *इबिस* ट्राइलॉजी पर काम करना शुरू किया । 1830 के दशक में स्थापित , इसकी कहानी चीन और हिंद महासागर क्षेत्र में प्रथम अफीम युद्ध के निर्माण पर आधारित है। इसकी पहली किस्त *सी ऑफ पॉपीज़* (2008) को 2008 मैन बुकर पुरस्कार के लिए चुना गया था । इसके बाद *रिवर ऑफ स्मोक* (2011) आई और तीसरी, *फ्लड ऑफ फायर* (2015) ने त्रयी को पूरा किया।

द शैडो लाइन्स जिसने उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार दिलाया , "सांप्रदायिक हिंसा की घटना पर प्रकाश डालती है और जिस तरह से इसकी जड़ें भारतीय उपमहाद्वीप के सामूहिक मानस में गहराई से और व्यापक रूप से फैल गई हैं"।[1] उनका अधिकांश कार्य ऐतिहासिक परिवेशों से संबंधित है , विशेष रूप से हिंद महासागर की परिधि में। महमूद कूरिया के साथ एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा:
"यह जानबूझकर नहीं किया गया था , लेकिन कभी-कभी चीजें जानबूझकर किए बिना जानबूझकर की जाती हैं। हालांकि यह कभी भी किसी योजनाबद्ध उद्यम का हिस्सा नहीं था और एक सचेत परियोजना के रूप में शुरू नहीं हुआ था , मुझे बाद में एहसास हुआ कि यह वास्तव में वह है जो मुझे हमेशा सबसे ज्यादा दिलचस्पी देता था: खाड़ी की खाड़ी बंगाल , अरब सागर , हिंद महासागर , और इन क्षेत्रों के बीच संबंध और क्रॉस-कनेक्शन।"

2019 में प्रकाशित घोष की *गन आइलैंड* , जलवायु परिवर्तन और मानव प्रवास से संबंधित है , जिसे आलोचकों से प्रशंसा मिल / *कोलंबिया जर्नल* की एक समीक्षा के अनुसार ,
"यह घोष अपने दृढ़, थके हुए सर्वश्रेष्ठ रूप में हैं - अपनी मातृभूमि की एक पौराणिक कहानी को मानवीय स्थिति की दुर्दशा के साथ जोड़ते हुए , पूरे देश को एक दर्पण के रूप में प्रस्तुत करते हुए जिसे वह अब

अपना घर कहते हैं , साथ ही साथ शायद बहुत अधिक आशावादी भी प्रदान करते हैं हमारी जलवायु के भविष्य पर परिप्रेक्ष्य"

उपन्यास यथार्थवादी कल्पना की दुनिया बनाता है , जो पर्यावरण की मांगों पर कार्य करने के लिए अपने पाठकों की एजेंसी को चुनौती देता है। धर्म का उपयोग , जादुई यथार्थवाद, संयोग और जलवायु परिवर्तन एक साथ मिलकर संघर्ष, आघात, रोमांच और रहस्य की एक संपूर्ण कहानी बनाते हैं। पाठक द गन मर्चेंट की कहानी को सुलझाने की यात्रा पर निकलता है और प्रकृति के विनाश और मानवीय कार्यों के प्रभावों में खुद को शामिल करता है। घोष अपने मुख्य चरित्र , अपनी कहानी और प्रचलित जलवायु संकट के माध्यम से उपन्यास को बदल देते हैं। उपन्यास स्पष्ट रूप से एक मनोरंजक कथानक में गुँथा हुआ एक्शन का आह्वान है। हालाँकि , *द गार्जियन ने* घोष की स्पर्शरेखा पर जाने की प्रवृत्ति पर ध्यान दिया और इसे "एक झबरा कुत्ते की कहानी " कहा, जो "वास्तविकता की ओर एक बहुत ही घुमावदार रास्ता ले सकती है, लेकिन अंत में यह वहीं पहुंचेगी।"

2021 में, घोष ने पद्य में अपनी पहली पुस्तक , *जंगल नामा प्रकाशित की* , जो बॉन बीबी की सुंदरबन किंवदंती की पड़ताल करती है ।

नॉन-फिक्शन

घोष के उल्लेखनीय गैर-काल्पनिक लेखन हैं *इन एन एंटीक लैंड* (1992), *डांसिंग इन कंबोडिया एंड एट लार्ज इन बर्मा* (1998), *काउंटडाउन* (1999), और *द इमाम एंड द इंडियन* (2002, कट्टरवाद जैसे विषयों पर निबंधों का एक संग्रह) , उपन्यास का इतिहास , मिस्र की संस्कृति और साहित्य । उनके लेखन भारत और विदेशों में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में दिखाई देते हैं। *द ग्रेट डिरेंजमेंट: क्लाइमेट चेंज एंड द अनथिंकेबल* (2016) में घोष ने आधुनिकता पर चर्चा की। साहित्य और कला जलवायु परिवर्तन को पर्याप्त रूप से संबोधित करने में विफल रहे हैं ।

2021 में, *द नटमेग्स कर्स: पैरेबल्स फॉर ए प्लैनेट इन क्राइसिस* प्रकाशित हुआ था। इसमें , घोष ने अपने मूल बांदा द्वीप समूह से दुनिया के कई अन्य हिस्सों तक जायफल की यात्रा पर चर्चा की, इसे एक लेंस के रूप में लिया जिसके माध्यम से स्वदेशी संस्कृतियों और पर्यावरण परिवर्तन के प्रति दृष्टिकोण पर उपनिवेशवाद के ऐतिहासिक प्रभाव को समझा जा सके । अपने नवीनतम काम , *स्मोक एंड एशेज: ए राइटर्स जर्नी थ्रू ओपियम हिडन हिस्ट्रीज़* (2023) में, घोष ने अफ़ीम के इतिहास पर अपना शोध प्रस्तुत किया है। प्रथम अफ़ीम युद्ध के पीछे का इतिहास उनकी इबिस त्रयी (2008-12) की पृष्ठभूमि के रूप में भी कार्य करता है।

पुरस्कार और मान्यता

द सर्कल ऑफ़ रीज़न ने फ़्रांस के शीर्ष साहित्यिक पुरस्कारों में से एक , प्रिक्स मेडिसिस एट्रेंजर जीता । *द शैडो लाइन्स ने* साहित्य अकादमी पुरस्कार और आनंद पुरस्कार जीता । *कलकत्ता क्रोमोज़ोम ने* 1997 के लिए आर्थर सी. क्लार्क पुरस्कार जीता। *सी ऑफ पॉपीज़ को* 2008 के मैन बुकर पुरस्कार के लिए चुना गया था । यह 2009 में वोडाफोन क्रॉसवर्ड बुक अवार्ड का सह-विजेता था , साथ ही 2010 डैन डेविड पुरस्कार का

भी सह-विजेता था । *रिवर ऑफ स्मोक को* मैन एशियन लिटरेरी प्राइज 2011 के लिए चुना गया था। भारत सरकार ने उन्हें 2007 में पद्म श्री के नागरिक सम्मान से सम्मानित किया । मार्गरेट एटवुड के साथ उन्हें इजरायली डैन डेविड पुरस्कार भी मिला ।

घोष ने "कॉमनवेल्थ" शब्द पर अपनी आपत्तियों और नियमों में निर्दिष्ट अंग्रेजी भाषा की आवश्यकता की अनुचितता का हवाला देते हुए अपने उपन्यास *द ग्लास पैलेस को* कॉमनवेल्थ राइटर्स पुरस्कार के लिए विचार से वापस ले लिया , जहां इसे यूरेशियन खंड में सर्वश्रेष्ठ उपन्यास से सम्मानित किया गया था।

घोष को 20 नवंबर 2016 को टाटा लिटरेचर लाइव , मुंबई लिटफेस्ट में लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार मिला। उन्हें दिसंबर 2018 में 54वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया और वह अंग्रेजी के पहले भारतीय लेखक हैं जिन्हें इस सम्मान के लिए चुना गया है।